catus. Ragh. 4.24.: सरितो कुर्वती गाधाः पथश्चा ऽश्यानकर्दमान्·

श्रङ्क् 1. A. (गतौ K. सर्पे V.) ire. *Vid. sq. et cf.* श्लङ्क्, स्रङ्क्, श्वङ्क्·

श्रङ्ग् 1. P. (व्रजे; scribitur श्रग्) ire. *Cf.* श्लङ्ग्, श्वङ्ग्, श्रङ्क्, श्लङ्क्, श्रि, germ. vet. *slange* serpens, *slenga* funda.

श्रण् 1. et 10. P. श्रणामि, श्राणयामि (दाने) dare, largiri.

c. वि *id.* R. Schl. II. 32.35.: गवां सहस्रम् अस्त्य् एकं यद् अविश्राणितम् मया·

श्रत् *Indecl.* fides. *Invenitur in compositione cum rad.* धा *q. v.*

1\. श्रथ् 1. et 10. P. (बन्धने K. बन्धे मोक्षे वधे V.) ligare, nectere, solvere, occidere. *Cf.* ग्रन्थ्, श्रन्थ्, श्लथ्, श्नथ्, lat. *crâtes, rete, res-tis* e *ret-tis*, v. Ag. Benary p. 222. et 262.)

2\. श्रथ् 1. P. (वधे) ferire, occidere. *Vid.* श्नथ्·

3\. श्रथ् 10. P. श्रथयामि (दौर्बल्ये) debilem, laxum, solutum esse. *Cf.* 1. श्रन्थ्·

4\. श्रथ् 10. P. श्राथयामि (प्रतिहर्षे मोक्षयत्नयोः K. प्रतिहृषि यत्ने V.) exhilarare, niti, operam dare. — *In dial. Vêd.* solvere. Rigv. 24.14.: एनांसि शिश्रथः (praet. mltf. sensu Imper.) कृतानि· *Vid.* 1. et 2. श्रन्थ्·

श्रद्ध (e श्रत् et ध ponens) fidem ponens, credens. Bh. 17.3.

श्रद्धा *f.* (e श्रत् et धा positio, a r. धा) fides. Bh. 6.37.

श्रद्धामय (a praec. s. मय) fide praeditus. Bh. 17.3.

श्रद्धावत् (a श्रद्धा s. वत्) fide praeditus. Bh. 3.31. 4.29.

1\. श्रन्थ् 1. A. (शैथिल्ये; scribitur श्रथ्) laxum, solutum esse. *Cf.* श्रथ्·

2\. श्रन्थ् 1. et 10. P. (सन्दर्भे K. दर्भे वधे V.) jungere, nectere, serere; occidere. *Cf.* 2. ग्रन्थ्, 1. श्रथ्·

3\. श्रन्थ् 9. P. श्रथ्नामि (मोचनप्रतिहर्षयोः K. मोक्षे प्रतिहृषि V.) solvere, exhilarare.

श्रम् 4. P. श्राम्यामि (gr. 331[a].), praet. mltf. अश्रमम्· Defatigari. Bhatt. 14.48.: ना ऽश्रमद् घ्नन् प्लवङ्गमान्· — श्रान्त (gr. 616.) defatigatus, defessus. H. 1.4.: श्रान्ताः पिपासार्ता निद्रान्धाः पाण्डवाः; N. 15.10.: क्व सा … श्रान्ता शेते· *Vid.* क्लम्· (Huc vel ad क्लम् trahi posset germ. vet. *HLAD* onerare (*hladu, hluod*), abjecto *m* et addito *d*, v. gr. comp. 109[b]. 1. et cf. gerund. scr. गत्य a गम्, gr. 637.)

c. परि *id.* परिश्रान्त defatigatus, defessus. H. 1.34. Su. 1.8. N. 13.4.

c. वि quiescere, requiescere. R. Schl. I. 62.1.: श्रान्तवाहनो व्यश्राम्यत्; Mah. 1.5211.: विशश्राम … कुरुवेश्मनि· *Etiam cl.* 1. P. A. Mah. 3.3397.: विश्रमेद् यत्र श्रान्तः; H. 1.25.: विश्रमध्वम्· — *Pass. impers.* N. 21.27.: विश्राम्यताम् इत्य् उवाच क्लान्तो ऽसि (विश्राम्यताम् anomale pro विश्रम्यताम्, nisi pertinet ad Caus.). — विश्रान्त qui requievit, requietus, relaxatus. N. 17.28. 18.18. Sa. 5.66. — *Caus.* विश्रामयामि requiescere facio. Mah. 3.11004.: अजिनसंस्तरे पार्थां विश्रामयामासुर् लब्धसञ्ज्ञाम्·

श्रम *m.* (r. श्रम् defatigari s. अ) lassitudo. H. 1.19. Sa. 5.3.27.

श्रम्भ् 1. A. (विश्वासे; scribitur etiam स्रम्भ्) confidere. *Nonnisi cum* वि *compositum invenitur.* विश्रब्ध confidens. Mah. 3.12996.: त्वम् इह विश्रब्धश् चर; R. Schl. II. 19.5. Hit. 22.17. — विश्रब्धम् *Adv.* confidenter. N. 4.2.

श्रवण (r. श्रु s. अन) 1) *n.* auditio. Mah. 3.8300. 2) *m. n.* auris. Am.

श्रवस् *n.* (r. श्रु s. अस्) 1) *id.* Am. 2) *in dial. Vêd.* gloria. (Hib. *cluas* auris.)

श्रा 2. P. coquere. *Part. pass.* श्रित et श्राण, anom. शृत (*in dial. Vêd.* श्रात et श्रित). N. 23.20.: श्रितम् मांसम् (ed. Calc. 3.2941. शृतम्); R. Schl. II. 56.24.: अयं सर्वः समस्ताङ्गः श्रितः कृष्णमृगो मया· — *Caus.* श्रपयामि (pro श्रापयामि) facio ut coquatur, coquo. R. Schl. I. 13.39.: पतत्रिणस् तस्य वपाम् उद्धृत्य … अपयामास; II. 56.21.: ऐणेयं श्रपयस्व; Mah. 1.6392.: याज्ञेन श्रपितं हव्यम्; 3.5038.: चरुश्च श्रपयन्· (Vid.